ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 123-126
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

परिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन में केन्द्रीय स्थान

1. डॉ0 विनय कुमार सिंह
2. संतोष कुमार यादव

1. शोध निर्देशक– विभागाध्यक्ष शिक्षक–शिक्षा विभाग तिलकधारी महाविद्यालय,जौनपुर,
2. शोधार्थी–शिक्षाशास्त्र विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 02 .12. 2021, Revised- 07 .12. 2021, Accepted - 11.12.2021 E-mail: devendrakumarnimesh@gmail.com

सारांश: ***आधुनिक मनोवैज्ञानिक शिक्षा का एक उद्देश्य यह है कि व्यक्ति में सुसमायोजन की क्षमता और योग्यता उत्पन्न हो, इसलिए शिक्षा का नवीन दृष्टिकोण परंपरागत विषयों की मात्र जानकारी पर बल नहीं देता, वरन् यह चाहता है कि व्यक्ति बदलती हुई परिस्थितियों में अपना सुसमायोजन कुशलता से कर सके। यही कारण है कि आधुनिक मनोविज्ञान और शिक्षा में व्यक्तित्व समायोजन केन्द्रीय स्थान रखता है। जब व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी नहीं होती, जब वह असंतुष्ट होता है और उसके फलस्वरूप उसके मन में निराशा एवं कुण्ठा उत्पन्न होती है। इसके कारण उसके समायोजन में अनेक प्रकार की कठिनाई उत्पन्न होती है।***

कुंजीभूत शब्द– आधुनिक मनोवैज्ञानिक शिक्षा, सुसमायोजन, नवीन दृष्टिकोण, परंपरागत विषय, रिराशा, कुण्ठा।

परिवारिक वातावरण– परिवार बालकों की प्रथम पाठशाला होती है जहाँ उसका व्यक्तित्व आकार ग्रहण करता है। सभी रूचियों, आदतों, दृष्टिकोणों एवं धारणाओं के विकास में परिवारिक वातावरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। परिवारिक सदस्यों द्वारा प्रदत्त निर्देश, प्रेरण, सहयोग, प्रोत्साहन आदि मिलकर परिवारिक वातावरण बनाते है। ऐसे में परिवारिक वातावरण समायोजन पर पर्याप्त प्रभाव डालता है क्योंकि परिवार समाज की इकाई होती है। समायोजन की क्षमता का विकास बालक प्रथम पाठशाला परिवार से ही प्राप्त करता है। जिस घर का वातावरण बुद्धिमान माता–पिता का होता है, पारस्परिक प्रेममय वातावरण होता है, उस घर के बच्चें स्वभाव से कोमल, विनम्र व ज्ञानी होते है। इस प्रकार घर प्रारम्भिक पाठशाला और परिवार में रहने वाले प्रत्येक सदस्यों का आचरण बालक के लिए प्रथम पुस्तक के समान होता है।

समायोजन का अर्थ एवं परिभाषा – समायोजन का अभिप्राय उस अवस्था से है, जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकताएँ और दूसरी ओर पर्यावरण की मांगें पूर्णरूप से संतुष्ट होती है। समायोजन में व्यक्ति और उसके सामाजिक तथा वस्तुनिष्ठ परिवारिक वातावरण में सामंजस्य होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी शारीरिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयास करता है। इस प्रयास में वातावरण की अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, जिसके फलस्वरूप कभी–कभी उनकी इन आवश्यकताओं एवं वातावरण की परिस्थितियों में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है, जो व्यक्ति इस असंतुलन का समाधान कर लेते हैं, उन्हें समायोजित और जो समाधान नहीं कर पाते, उन्हें कुसमायोजित कहते हैं।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि –''जीवन का दूसरा नाम समायोजन है।'' अतः समायोजन का अर्थ है – ''परिस्थितियों के अनुरूप अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना।''

समायोजन की परिभाषा– विभिन्न विद्वानों ने समायोजन की परिभाषा निम्नलिखित प्रकार से दी है–

1. गेट्स एवं सहयोगी – ''समायोजन निरंतन चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

2. जेम्स सी. कोलमेन– ''समायोजन वह व्यवहार है, जिसके द्वारा व्यक्ति प्रतिबल का सामना करता है और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है।''

समायोजन की प्रक्रिया– समायोजन की प्रक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति व पर्यावरण के साथ प्रभावपूर्ण व उचित समायोजन बनाये रखना। व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक कार्य करता है, किन्तु बाह्य एवं आंतरिक कठिनाईयों के कारण इसमें बाधा उपस्थित होती है और वह इन बाधाओं को दूर करने के लिए अन्य अप्रत्यक्ष साधनों का प्रयोग करता है, जिससे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

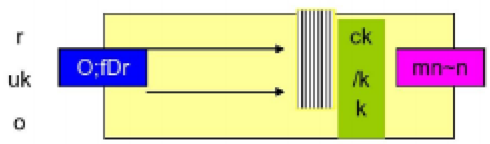

समायोजन की प्रक्रिया

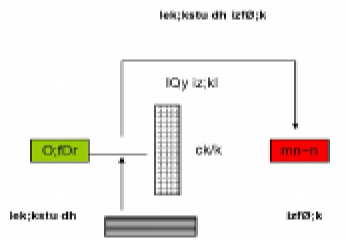

समायोजन की प्रक्रिया

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

शेफर तथा शोवेन ने समायोजन को एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया है। उनके अनुसार जीवन उन परिस्थितियों का एक ऐसा क्रम है, जिससे आवश्यकताएँ उत्पन्न होती हैं और फिर उन्हें पूरा किया जाता है। इसी परिचित पैटर्न को समायोजन की प्रक्रिया कहते हैं, जो निम्नानुसार है–

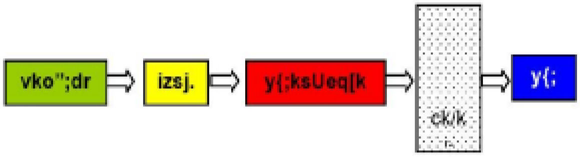

समायोजन प्रक्रिया के प्रमुख चरण

प्रथम चरण– इसका संबंध व्यक्ति के द्वारा किसी लक्ष्य के प्राप्ति के निमित्त क्रिया का होता है।

द्वितीय चरण– जब व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य करता है, तब बाधाएं उपस्थित होती हैं। ये बाधाएँ व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक क्षमताओं से संबंधित होती है।

तृतीच चरण– इसमें व्यक्ति बाधाओं को दूर करने का प्रयास करता है। कभी वह ऐसा प्रयास करता है कि उसे सफलता मिलती है और कभी उसे असफलता मिलती है।

चतुर्थ चरण– व्यक्ति अपनी बाधाओं को दूर करने में सफल हो जाता है, परंतु जब कभी वह अपनी बाधाओं को दूर नहीं कर पाता तो वह अपने लक्ष्य में संशोधन कर लेता है। प्रयास करता है कि परेशानी का सामना न हो।

पंचम चरण– इसका संबंध लक्ष्य प्राप्ति से है। अर्थात् जब व्यक्ति अपनी कठिनाईयों एवं बाधाओं से मुक्त होकर लक्ष्य प्राप्त कर लेता है, तब समायोजन की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है।

समायोजन में संकट– समायोजन में जो संकट आते हैं उन्हें दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं – 1. वैयक्तिक, 2. समाज एवं संस्कृति संबंधी कठिनाई। इन दोनों वर्गों से संबंधित कठिनाईयों का आपसी संबंध अत्यधिक घनिष्ठ होता है और इन्हें सरलता से अलग नहीं किया जा सकता।

1. वैयक्तिक अक्षमताएँ – व्यक्ति किसी शारीरिक या मानसिक अक्षमता से पीड़ित होता है तब उसमें अत्यधिक कुंठा पाई जाती है, यह कुंठा समायोन में एक प्रकार का संकट माना जाता है।

2. निर्धनता– निर्धनता के कारण अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति न कर पाने की वजह से व्यक्ति मानसिक रोगों से ग्रसित हो जाता है, जिससे समायोजन में बाधा उपस्थित होती है।

3. खंडित परिवार– परिवार में संबंध विच्छेद हो जाने से इसका बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिक शोधों से ज्ञात हुआ है कि खंडित परिवारों के बच्चे प्रायः कुसमायोजित होते हैं।

4. माता–पिता व संतान में संबंध – माता–पिता का संतान के प्रति अत्यधिक स्नेह या स्नेहरहित भावना संतान का स्वस्थ विकास नहीं होने देती और उनके समायोजन में कठिनाई उत्पन्न होती है।

5. माता–पिता की अभिवृत्तियाँ – माता–पिता का व्यवहार तानाशाही या बच्चों के प्रति लापरवाही का है तो दोनों ही स्थितियों में बच्चे बिगड़ जाते हैं और तब समायोजन संबंधी संकटों का सामना बच्चों को करना पड़ता है।

6. माता–पिता की प्रत्याशायें– बालक की क्षमता से अधिक की प्रत्याशा माता–पिता द्वारा किए जाने पर बालक के समक्ष समायोजन में संकट उपस्थित होता है।

7. वर्ग–संस्कृति – समाज में उच्च वर्ग के धनी, मध्यम वर्ग के औसत आमदनी स्तर वाले तथा निम्न वर्ग के प्रायः गरीब एवं अशिक्षित लोग आते हैं। विभिन्न वर्गों की संस्कृतियां भी भिन्न–भिन्न होती है। जब भिन्न–भिन्न वर्गों के लोग एकत्र होते हैं, तब वर्ग संस्कृति में अंतर के कारण समायोजन संबंधी संकट उपस्थित होता है।

सुसमायोजन के लक्षण – पी.एम. साइमंड्स के अनुसार – सुसमायोजन के निम्नलिखित लक्षण है–

1. समाकलन –सुसमायोजित व्यक्ति आंतरिक द्वन्द्वों से मुक्त होता है तथा अपनी कठिनाईयों का सामना दृढ़ता से करता है। उसके व्यक्तित्व में किसी प्रकार का अन्तर्विरोध नहीं पाया जाता।

2. प्रभावकारी बुद्धि – सुसमायोजित व्यक्ति अपने जीवन की समस्याओं को बुद्धिपूर्वक सुलझा लेता है तथा अपनी योगयता एवं क्षमता के अनुरूप सभी कार्य करता है।

3. यथार्थ का स्पष्टीकरण – सुसमायोजित व्यक्ति अपने जीवन के यथार्थ को स्वीकार करता है। वास्तविक यथार्थ का अर्थ है कि व्यक्ति सुख–दुख, लाभ–हानि, मान–अपमान आदि परिस्थितियों में अपने समायोजन को बनाये रखता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

4. उत्तरदायित्व की भावना– सुसमायोजित व्यक्ति वह है जो अपने सभी कार्यों की जिम्मेदारी स्वीकार करता है।

5. भावात्मक अभिव्यक्ति– जीवन में आत्म संयम का बड़ा महत्व है किन्तु इसके साथ यह भी अपेक्षित है कि व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर अपने भावों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त कर सके।

6. सामाजिक संबंध – सुसमायोजित व्यक्ति का सामाजिक संबंध स्वस्थ व मधुर होता है। ऐसे व्यक्ति अपने व्यवहार के कारण समाज में लोकप्रिय होते हैं।

7. व्यक्ति में दृढ़ता– सुसमायोजित व्यक्ति न केवल परिस्थिति से अनुकूलन की क्षमता रखता है, वरन् परिस्थिति को अपने अनुकूल भी बना लेता है।

8. जगत के प्रति भाव– सुसमायोजित व्यक्ति अपने जगत के प्रति अनुकूल भाव रखता है तात्पर्य यह है कि वह सबके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करता है।

9. स्वपीड़ा से बचना– सुसमायोजित व्यक्ति से यदि कोई अपराध हो गया हो तो उसके लिए आवष्यक पश्चाताप करके वह स्वपीड़ा से बच जाता है।

10. प्रेम स्वीकरण की क्षमता– सुसमायोजित व्यक्ति में यह क्षमता होती है कि वह दूसरों के द्वारा उसके प्रति प्रेम व्यक्त किया जाता है उसे सहर्श स्वीकार करता है और प्रेम के बदले प्रेम देने में नहीं हिचकता।

11. अच्छा स्वास्थ्य– समायोजन के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक अच्छे स्वास्थ्य का होना है। अच्छे स्वास्थ्य के अभाव में व्यक्ति कार्य को सुचारू रूप से नहीं कर सकता, अतः सर्वथा असंतुष्ट होने के कारण कुसमायोजित हो जाता है।

समायोजन का महत्व– समायोजन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक परिवर्त्य है, क्योंकि प्रत्येक जीवित प्राणी के सामने कुछ न कुछ परेशानियाँ एवं समस्यायें होती है। एक व्यक्ति कितना प्रभावशाली है यह इस बात से स्पष्ट होता है कि वह इन समस्याओं को तथा जीवन की चुनौतियों को किस प्रकार स्वीकार करता है किस प्रकार उनके साथ समायोजन करता है।

समायोजन मुख्यतः तीन बातों पर निर्भर करता है :–

1. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों, प्रेरणाओं और लक्ष्यों आदि में समन्वय जितना ही अधिक होता है, समायोजन उतना ही अच्छा होगा।
2. व्यक्ति की इच्छाओं, विचारों, प्रेरणाओं, लक्ष्यों आदि की पूर्ति किस मात्रा में और किस रूप में हुई है।
3. व्यक्ति की इच्छायें विचार और लक्ष्य आदि सामाजिक मूल्यों से कहाँ तक मेल खाते हैं ? इनमें मेल जितना ही अधिक होगा, समायोजन उतना ही अच्छा होगा।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक तो मनोविज्ञान की परिभाषा करते हुए कहते हैं– ''मनोविज्ञान समायोजन का विज्ञान है। यह समायोजन सामान्य तथा विशिष्ट दोनों क्षेत्रों में हो सकता है।''

एलेक्जेंडर एवं स्नीड का कथन है कि –''समायोजन से अभिप्राय कई प्रत्ययों से है जैसे अभाव, अतृप्ति, भग्नाशा एवं तनाव की स्थितियों से बचने की क्षमता, मन की शांति एवं लक्ष्यों का निर्माण।

''अतः समायोजन से अभिप्राय व्यक्ति की आंतरिक एवं बाह्य मांगों एवं अभावों के मध्य सामंजस्य तथा संतोषजनक संबंध कायम रखना है। समायोजन का जीवन से घनिष्ठ संबंध है, क्योंकि एक सुसमायोजित एवं स्वास्थ व्यक्ति ही समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

किसी बच्चे में समायोजन के निम्नांकित गुण होते हैं –

1. बच्चे अपने आदर्श और सामाजिक मूल्यों के अनुसार व्यवहार करते हैं।
2. सहीढंग से समायोजित बच्चों के विचार काल्पनिक न होकर वास्तविकता पर आधारित होते हैं।
3. ये निडर तथा साहसी होते हैं। जीवन की कठिनाईयों का डटकर मुकाबला करते हैं।
4. अपने भावी जीवन का निर्धारण करने में सक्षम होते हैं।
5. संवेगों के प्रभाव में नहीं आते तथा कोई भी कार्य विवेकपूर्ण ढंग से करते हैं।
6. अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना जानते हैं।

समायोजन में बालक की सहायता– बालक किन्हीं कारणोंवश कुसमायोजित हो जाता है तब उसके रोकथाम के लिये तथा बालक पुनः समायोजन प्राप्त कर सके इसके लिये निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं –

(1) प्रेमपूर्ण व्यवहार– अध्यापक तथा माता–पिता को प्रेम पूर्ण ढंग से बालक की कठिनाईयों को समझाने का प्रयत्न करना चाहिए। सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार से बालक को बाधायें पार करने में सहायता मिलती है।

(1) बालक के सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में सहायक– पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों की शिक्षा का समावेश करके बालक

को सफल व्यक्ति, उत्तम नागरिक और समाज का उपयोगी सदस्य बनाया जा सकता है, तभी उसके चरित्र का निर्माण होगा तथा उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होगा।

2. व्यक्तिगत निर्देशन– बालक के असामाजिक व्यवहार का प्रमुख कारण उन्हें मिलने वाले उचित मार्गदर्शन का अभाव है। बालक या मार्गदर्षन उसके माता–पिता या शिक्षक (विद्यालय) कर सकता है। यह मार्गदर्शन बालक की नैतिक मूल्य एवं समायोजन क्षमता के ज्ञान के पश्चात् किया जा सकता है। बालकों की इच्छाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर बालक कुंठित व निराश हो जाता है। इन परिस्थितियों में बालक अपने आपको असमायोजित महसूस करता है। शिक्षक ऐसे छात्रों को व्यक्तिगत निर्देशन देकर उनकी कुंठा और निराशा को दूर कर सकता है। इस तरह कुसमायोजन को दूर किया जा सकता है।

3.अभिभावकों के लिये महत्व– अपने पाल्य में भविष्य के सपने देखता हुआ अभिभावक उसे इस आशा और विश्वास के साथ विद्यालय में प्रवेश करवाता है कि उसका पाल्य सपनों को साकार करेगा। पाल्य की मानसिक, शारीरिक, नैतिक योग्यताओं, समायोजन क्षमता की अज्ञानता के कारण अभिभावक पाल्य को उचित अवसर उपलब्ध नहीं करवा पाता। इस अध्ययन से अभिभावकों में इस जागरूकता का विकास होगा कि प्रत्येक बालक में व्यक्तिगत भेद होता है और उसी के अनुरूप बालक शिक्षा ग्रहण करता है तथा उचित समायोजन करते हुए समाज और राष्ट्र की उन्नति में सहायता पहुंचा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पांडे, डॉ. राम शकल मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा 1992.
2. शर्मा, डॉ. रामनाथ, शर्मा डॉ. राजेन्द्र कुमार शैक्षिक समाज शास्त्र अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा 1993.
3. वशिष्ठ, बिजेन्द्र कुमार शिक्षाशास्त्र की प्रारंभिक रूपरेखा अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा 1988.
4. जायसवाल, सीताराम (1999) समायोजन विज्ञान।
5. कपिल, डॉ. एच.के. सांख्यिकी के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में) विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1988.
6. कपिल, डॉ. एच.के. अनुसंधान विधियॉं (व्यवहारपरक विज्ञानों में) हर प्रकाश भार्गव, आगरा 1989.
7. माथुर, एस.एफ. शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा विभाग, आर.ई.आई. ट्रेनिंग कॉलेज दयालबाग आगरा 1991.
8. पाठक, पी.डी. शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 1994.
9. राय, पारसनाथ अनुसंधान परिचय लक्ष्मीनारायण अगव्राल आगरा 1973.
10. श्रीवास्तव, डॉ.डी. एन. वर्मा डॉ. प्रीति मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2 1997.

*****